Str. 62. b. Die Scholien: काले जम्बुदातिमिलने मेघमालाश्यामले समये। किंगूत: प्रिय:। शठ:। पुन: (nämlich किंगूत:)। केवलं गत्तुं प्रवृत:। Ich verbinde केवलम् mit वाष्य — पूरेण.

Str. 63. Die Scholien : नेत्राभ्यां ग्रीत्राभ्यां च द्रष्टुं ग्रीतुं न समर्था-स्मीत्यनुरागातिशयो व्यज्यते ।

Str. 64. a. Die Scholien: कामस्तनुं शरीरं तनुं ज्ञीपां कुरुते (vgl. Str. 71. a.)। किंभूतः। विरुक्षेषु विषमः। ग्रसीं यमग्र व्यपेतवृषोा निर्देषो दिवसगणनाद्ज्ञः। ग्रया कल्यं (C. A. कल्य) वा वामा मिश्यिति इति दिवसं गणयित।

Str. 67. a. ब्यान शतुताम्. Ein Hiatus mitten im Halbverse; vgl. weiter unten Bhartrh. 12. b. च इमाम्

Str. 68. b. लावएय ist doppelsinnig.

Str. 69. a. Die Scholien: के कर्रभोरू (vgl. Çāk. Str. 69.) । कर्भः किर्शावकः । तस्य क्स्तेन सदशावूद्ध यस्याः । सा तथा । कर्भशब्देन गाणीवृत्त्या (C. A. °वृत्या) क्स्तिशावकक्स्त उच्यते । किंवा । कर्भस्तु कराद्धक्तः (Amara-K. Il. 6. 2. 32. मणिवन्धादाकित कर्स्य कर्भा विकः ।) । एतेनादी स्थूलः पश्चात्त्तीण ऊर्ह्यस्या इति वा । Die letztere Erklärung ist ohne allen Zweifel die richtige.

Str. 71. a. Vgl. Str. 64. a. — Die Scholien: कामम् = प्रकामं यथा स्यात. — b. Die Calc. Ausg. und Chezy gegen das Metrum: ससं- भ्रमम् st. सशङ्कम्, wie die Scholien haben.

Str. 79. b. Die Scholien: इति सर्वमानिया।